इकाई 2 राजनीति का सैद्धांतीकरण

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 ऐतिहासिक अभिगम (Approach)

2.3 समाजशास्त्रीय अभिगम

2.4 दार्शनिकीय अभिगम

2.5 एक समग्र अभिगम

2.6 राजनीति विज्ञान का स्वायत्त स्वरूप

2.7 अनुभवजन्य बनाम नियामक सिद्धांत

2.8 उत्कृष्ट कार्यों की समसामयिक प्रासंगिकता

2.9 परम्परागत राजनीतिक चिंतन की निरन्तरता

2.10 राजनीति का नया विज्ञान

2.10.1 ऐरिक वोगलिन के विचार

2.10.2 क्रिश्चियन बे के विचार

2.11 सारांश

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में राजनीतिक दार्शनिकीकरण/सैद्धांतीकरण के विभिन्न प्रासंगिक चिंतनों पर चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न के बारे में समर्थ हो जाएँगे :

- राजनीतिक घटनाक्रम के अध्ययन के लिए विभिन्न अभिगमों पर विचार-विमर्श करना;
- अनुभवजन्य और नियामक सिद्धांत के बीच अन्तर करना;
- यह जाँच करना कि राजनीति विज्ञान किस सीमा तक एक स्वायत्त विषय है;
- परम्परागत राजनीतिक चिंतन जिसमें कि क्लासिक्स समहित हैं, की प्रासंगिकता पर टिप्पणी करना; और
- राजनीति के नए विज्ञान पर विचार-विमर्श करना।

2.1 परिचय

राजनीति विज्ञान के स्वरूप और व्याप्ति (Scope) की एक सुस्पष्ट परिभाषा का प्रयास किए बिना कोई भी कह सकता है कि राजनीति और राजनीतिक घटनाक्रम का एक 'व्यापक' और 'संकीर्ण' दृष्टिकोण होता है– एक अपना ध्यान राजनीतिक क्रियाकलापों पर देता है तथा राजनीति को एक क्रिया या एक प्रकार की गतिविधि मानता है तथा दूसरा अपना प्रबल जोर राजनीतिक संरचनाओं पर देता है तथा स्वयं को विभिन्न प्रकार की राजनीतिक संस्थाओं के इर्द-गिर्द पाता है। अरस्तू ने स्पष्टतः राजनीति का एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाया था, जब उन्होंने इसकी मात्र राज्य में ही नहीं, अपितु परिवार, निगम, परिसंघ

अथवा गिरिजाघर में तलाश की जबकि अनुवर्ती वर्षों में कुल मिलाकर राजनीति पर विचार-विमर्श इसके संकीर्ण दृष्टिकोण तक सीमित था, जिसमें राजनीति को समाज की राजनीतिक और शासन की उप-व्यवस्थाओं के रूप में समझाया गया। हम समसामयिक लेखकों जैसे कैटलिन आदि को एक बार पुनः इस संकीर्ण दृष्टिकोण से हटता हुआ तथा अपनी प्रमुख चिंता के रूप में घटनात्मक संघर्ष पर ज़ोर देते हुए पाते हैं। इस दृष्टिकोण के प्रादुर्भाव से राजनीतिक वैज्ञानिक मात्र विवरणात्मक वर्गों से और अधिक संतुष्ट नहीं हैं, यद्यपि सही विवरण अन्य चरणों के मुकाबले प्रथम आवश्यक चरण है; अपितु वे विश्लेषण की और अधिक परिशोधित और परिष्कृत तकनीकों पर विचार करना चाहेंगे। दूसरे शब्दों में वे इसे राजनीति विज्ञान में बदलना चाहेंगे जिसे राजनीतिक दर्शन अथवा राजनीतिक चिंतन अथवा राजनीतिक सिद्धांत के रूप में माना गया था। उदाहरणार्थ, कैटलिन राजनीति विज्ञान को ''किसी भी बौद्धिक आधार पर समाजशास्त्र से भिन्न नहीं मानते'' और इनका यह मत है कि समाजशास्त्रियों का '' असंख्य व्यक्तिगत कार्यों और समूहों के मध्य हज़ारों सम्बंध'' का अध्ययन ''विश्वसनीय तुलनाओं और अरस्तु और मैक्यावली की श्रेष्ठतम परम्परा के अनुरूप स्थिरांकों (Constants) के प्रेक्षण (Abservation) का आधार बना''। तथापि, यह आश्चर्यजनक है कि क्या राजनीति की संकल्पना जिसमें परिवार नियंत्रण प्रणाली और पादरी प्रथा शामिल थी इतनी व्याप्त नहीं थी कि उन्हें अर्थहीन माना जाए।

2.2 ऐतिहासिक अभिगम (Approach)

राजनीति विज्ञान के प्रति परम्परागत और ऐतिहासिक अभिगम को जॉर्ज एच. सेबाइन द्वारा श्रेष्ठतम तौर पर अभिव्यक्त किया गया है। सैबाइन राजनीति विज्ञान की अपनी बड़ी व्यावहारिक परिभाषा के साथ आगे बढ़ते हैं। इनका सुझाव है कि हमें राजनीति विज्ञान में वे सभी विषय शामिल करने चाहिए जो सुप्रसिद्ध राजनीतिक दार्शनिकों - प्लैटो, अरस्तू, हॉब्बस, लॉक, रूसो, बेंथम, मिल, ग्रीन, हेगेल, मार्क्स और अन्यों के लेखन में प्रमुख प्रकरण रहे हैं। हम उन प्रश्नों का पता लगाने का प्रयास कर सकते हैं जो उन्होंने सत्य अथवा राजनीतिक सिद्धांतों की वैधता के बारे में उठाए हैं। राज्य में अथवा राज्य के माध्यम से प्राप्त होने वाले सामान अथवा आदर्श, स्वतंत्रता का अर्थ, मनुष्य शासन का आदेश क्यों मानते हैं, शासकीय क्रियाकलापों का दायरा, समानता का अर्थ आदि से जुड़े हुए प्रश्न कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो युगों-युगों से राजनीतिक दार्शनिकों के दिमागों पर छाए रहे हैं। इसके अतिरिक्त, हम राज्य, राज्य और समाज के बीच तथा व्यष्टि और राज्य के संबंध से जुड़े हुए प्रश्नों की एक सूची तैयार कर सकते हैं और उन पर विस्तार से चर्चा कर सकते है। यदि इन पर इन राजनीतिक दार्शनिकों द्वारा पूर्णरूपेण चर्चा नहीं की गई है। परम्परावादी मीमांसकों के अनुसार, ये चर्चाएँ राजनीतिक सिद्धांत का आधार तैयार करती हैं। सेबाइन और परम्परागत लेखकों ने ऐतिहासिक अभिगम को भारी महत्व दिया है। सेबाइन के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत हमेशा ''एक पर्याप्त विशिष्ट स्थिति के हवाले'' में प्रस्तुत किया जाता है और इसीलिए हमेशा ''एक पर्याप्त विशिष्ट समय, स्थान और स्थिति'' पुर्नःरचना आवश्यक है इसे समझने के लिए ये सब इस बात का सूचक नहीं हैं कि भविष्य के लिए इसका कोई महत्त्व नहीं है। महान् राजनीतिक सिद्धांत ''विद्यमान स्थिति के विश्लेषण और अन्य स्थिति के लिए सूचकत्व'', दोनों से उत्कृष्ट होता है। इस प्रकार एक श्रेष्ठ राजनीतिक सिद्धांत यद्यपि यह विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम होता है, सभी आने वाली परिस्थितियों में महत्त्वपूर्ण होता है। यथार्थतः राजनीतिक सिद्धांत का यही विश्वस्तरीय स्वरूप है जो उसे मान्यता प्रदान कराता है।

सेबाइन के अनुसार, एक प्रकारात्मक राजनीतिक सिद्धांत में शामिल होता है (क) ''उन कार्यों की संस्थितियों के बारे में तथ्यगत विवरण जिन्होंने इसे उत्कृष्टता प्रदान की'',

(ख) इन सबका विवरण ''जिन्हें मोटे तौर पर नैमित्तिक स्वरूप का कहा जा सकता है,'', और (ग) उनका विवरण जिनमें ''कुछ अवश्यमेव होते हैं अथवा भविष्य में सही अपेक्षित होते हैं''। इस प्रकार, सेबाइन के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत तीन घटकों से निर्मित होते हैं - तथ्यगत, नैमित्तिक और मूल्यांकनात्मक। सामान्यतः अति महत्त्व के राजनीतिक सिद्धांत तनावपूर्ण और विकृत अवधियों के दौरान विकसित हुए हैं। दो हज़ार पचास वर्षों से अधिक के ज्ञात इतिहास में, जब लगभग पचास वर्ष की दो अवधियाँ रही हैं पूर्णरूपेण प्रतिबंधित क्षेत्रों में राजनीतिक दर्शन सर्वाधिक फला-फूला है, 1) ईसा पूर्व की चौथी शताब्दी, दूसरे और तीसरे चरण में, एथेंस में जब प्लैटो और अरस्तू ने अपनी महान् कृतियाँ रचीं और 1640 और 1690 के मध्य इंग्लैड में जब हॉब्स लॉक और अन्यों ने अपने राजनीतिक सिद्धांत इजाद किये। ये दोनों काल यूरोप के सामाजिक और बौद्धिक इतिहास में बृहद परिवर्तनों के सूचक थे। इस प्रकार, महान् राजनीतिक सिद्धांत, सेबाइन के अनुसार ''राजनीतिक और सामाजिक संकट काल के अन्तराल में गुह्य हैं''। इस प्रकार वे संकटकाल के द्वारा नहीं, अपितु उस प्रतिक्रिया द्वारा प्रकट किए जाते हैं जो विचारवेत्ताओं की सोच को प्रभावित करती है। इस प्रकार राजनीतिक सिद्धांत को समझने के लिए समय, स्थान और उन परिस्थितियों को स्पष्टतः समझना आवश्यक है जिनमें इसका विकास हुआ। राजनीतिक दार्शनिक वस्तुतः अपने काल की राजनीति में भाग नहीं लेता, अपितु वह इससे प्रभावित होता है। सेबाइन के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत इस अर्थ में ''दुहरा अभिनय करते हैं'' कि यद्यपि वे विचारों की भावनात्मक दुनिया से जुड़े होते हैं, वे उन विश्वासों को भी प्रभावित करते हैं जो प्रेरक बन जाते हैं तथा ऐतिहासिक स्थितियों में नैमित्तिक घटनाओं के रूप में प्रस्तुत होते हैं। यह समझना भी आवश्यक है कि क्या एक राजनीतिक सिद्धांत सत्य है अथवा गलत, ठोस है अथवा मूर्खतापूर्ण, वैध है अथवा अविश्वसनीय। इसमें मूल्यों का प्रश्न अन्तर्ग्रस्त हैं। अतः यह आवश्यक है कि राजनीतिक सिद्धांत को समझने की प्रक्रिया में हम तथ्यगत, नैमित्तिक और मूल्यांकनात्मक घटकों पर भी चर्चा करने का प्रयास करें।

2.3 समाजशास्त्रीय अभिगम

ऐतिहासिक अभिगम की सामान्यतः ऐसे अभिगम के रूप में समालोचना की जाती है जो परम्परा के प्रति अत्यधिक सनाथ है। आधुनिक लेखकों द्वारा यह भी सूचित किया गया है कि यह अभिगम राजनीति के संकीर्ण दृष्टिकोण को लेकर आगे बढ़ता है और इसे राज्य के क्षेत्र तक सीमित रखता है। अनेक समसामयिक लेखकों ने राजनीति विज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाने का प्रयास किया है, जिसमें राज्य ही नहीं अपितु समाज को भी शामिल किया जा सके। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो स्पष्टतः कैटलिन द्वारा प्रतिपादित किया गया है। कैटलिन राजनीति को अरस्तू के संदर्भ में प्रयोग करना चाहेंगे, एक ऐसा संदर्भ जिसमें राजनीति में वे सभी क्रियाकलाप शामिल होते हैं जो समाज के संरक्षण में किए जाते हैं। कैटलिन राजनीति विज्ञान को समाजशास्त्र से अभिन्न मानते हैं। उन्होंने इस अभिगम के कई गुणों की ओर ध्यान आकर्षित किया है : (1) यह विद्यार्थी को सम्पूर्ण समाज के संबंधों और इसकी संरचना के अध्ययन की अनुमति देता है, न कि समाज के एक टुकड़े का जो यूरोप के एक हिस्से में पंद्रहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के बीच कृत्रिम तौर पर गठित हुआ और अब जिसका ''आधुनिक राज्य'' के रूप में वर्णन किया जाता है। (2) यह उसके अध्ययन को समाज के एक सामान्य सिद्धांत से जोड़ता है जिसे राजनीतिवेत्ता मात्र अपने संकट काल में अनदेखा कर सकते हैं। यह ऐसा कुछ है जो सर्वाधिक आधुनिक राजनीतिवेत्ताओं द्वारा नहीं किया गया है। (3) यदि राजनीतिवेत्ता राज्य अपने विश्लेषण की इकाई के रूप में लेता है, उस स्थिति में संभव है कि वह दिन-प्रतिदिन होने वाली राजनीतिक घटनाओं से संबंधित जनजातीय और जनसामान्य ब्यौरों की ओर ध्यान न दे, जिन्हें वह तब तक नहीं समझ सकता जब तक वह उन्हें समाज में हो रही घटनाओं से

न जोड़े। वर्तमान में कई राज्य हैं परन्तु उन्हें राजनीति के विश्लेषणार्थ, व्यष्टिगत इकाई के रूप में नहीं माना जा सकता। पहले उनके मूलभूतस्वरूप को समझना पड़ेगा। (4) यदि राजनीतिवेत्ता संस्थाओं के परे जाने का निर्णय लेता है और कार्यों और प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है, तो उसके लिए एक इकाई का विश्लेषण अधिक आसान होगा। कैटलिन ने राजनीति के अध्ययन के लिए प्रमुख चिन्तन के रूप में अपने पक्ष में नियंत्रणोन्मुख घटना के अध्ययन का विकल्प चुना है। नियंत्रण के कार्य से उनका तात्पर्य है ''व्यष्टियों के कार्य''। कैटलिन को राजनीति की उस परिभाषा पर कोई आपत्ति नहीं होगी जैसा वी.ओ.की. ने ''शासन के अध्ययन'' के रूप में की है बशर्ते हम ''शासन'' को नियंत्रण के पर्याय के रूप में स्वीकार करें, न कि संस्थाओं के पर्याय के रूप में, जैसा कि राष्ट्रपति अथवा मंत्रिमंडल के लिए किया जाता है। राजनीति को ''सत्ता और प्रभाव का अध्ययन'' भी पुकारा जा सकता है, यदि हम स्पष्टतः समझ पाएँ कि ''प्रभाव शासन नहीं है'', अथवा मैक्स वेबर के शब्दों में, ''सत्ता के लिए संघर्ष अथवा सत्तासीनों को प्रभावित करना'', तथा ''इस प्रकार राज्यों के बीच और राज्यों के भीतर संगठित समूहों के बीच संघर्ष को अंगीकार करना'' है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति/राजनीतिक घटना के 'व्यापक' और 'संकीर्ण' दृष्टिकोण क्या हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजनीति के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अथवा समाजशास्त्रीय अभिगम के प्रमुख लक्षणों को बताएँ और उनका वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 दार्शनिकीय अभिगम

राजनीति विज्ञान संबंधी परम्परागत और समसामयिक दृष्टिकोणों के अतिरिक्त लियो स्ट्रॉस द्वारा प्रतिपादित एक तृतीय दृष्टिकोण है जिसका दार्शनिकीय अभिगम के रूप में वर्णन किया जा सकता है। लियो स्ट्रॉस राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन के मध्य भेद करते हैं और मानते हैं कि ये दोनों राजनीतिक चिंतन के अंग हैं। स्ट्रॉस के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत ''राजनीतिक मामलों के स्वरूप को जानने के लिए सच्चा प्रयास है''। दर्शन ''विवेक के लिए तलाश'' अथवा ''भूमंडलीय ज्ञान-संपूर्ण ज्ञान के लिए तलाश'' होने के कारण राजनीतिक दर्शन राजनीतिक मामलों के स्वरूप, और अधिकार दोनों अथवा श्रेष्ठता, राजनीतिक व्यवस्था को जानने का सच्चा प्रयास'' है। राजनीतिक चिंतन राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन दोनों पर लागू होता है। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीति दर्शन एक-दूसरे के समसामयिक हैं, क्योंकि आमतौर पर कहा जाता है कि ''चिंतन अथवा क्रिया अथवा कार्य को उसका मूल्यांकन किए बिना समझना असंभव है।'' स्ट्रॉस ''इतिहासवाद'' और ''सामाजिक विज्ञान प्रत्यक्षवाद'' दोनों, जिन्हें सेबाइन द्वारा प्रतिपादित किया गया था, की समालोचना करता है। कैटलिन इनका पक्ष लेता रहे हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में पूर्ववर्ती स्थिति ''राजनीति दर्शन की गंभीर विरोधी'' है।

स्ट्रॉस का विश्वास है कि मूल्य राजनीति दर्शन के अभिन्न अंग हैं और उन्हें राजनीति के अध्ययन से अलग नहीं किया जा सकता है। सभी राजनीतिक क्रियाकलापों का लक्ष्य रक्षण अथवा परिवर्तन है जो किसी चिंतन अथवा मूल्यांकन कि क्या गलत है और क्या सही, द्वारा दिशा-निर्देशित होता है। एक राजनीतिक शास्त्री से आशा की जाती है कि उसके पास महज राय से कुछ अधिक हो। उसके पास एक ज्ञान, अच्छाई का ज्ञान – अच्छी जिंदगी और अच्छे समाज का ज्ञान . होना चाहिए। ''यदि यह प्रत्यक्षवादिता सुस्पष्ट हो, यदि मानव अच्छी जिंदगी और अच्छे समाज का ज्ञान प्राप्त करने का अपना सुस्पष्ट लक्ष्य बनाए तो राजनीति दर्शन का प्रादुर्भाव होता है।'' स्ट्रॉस लिखता है, ''राजनीतिक मामलों के स्वरूप से जुड़ी कल्पनाएँ जो राजनीतिक मामलों की सभी जानकारियों में सन्निहित हैं, मतों के स्वरूप की होती हैं। ऐसा तभी होती है जब ये कल्पनाएँ समालोचनात्मक और संसक्तात्मक विश्लेषण का प्रकरण बन जाती हैं जिससे राजनीति के दार्शनिकीय अथवा वैज्ञानिक अभिगम प्रकट होता है।'' उसके अनुसार, ''राजनीति दर्शन राजनीतिक मामलों के स्वरूप के बारे में अभिमत को राजनीतिक मामलों के स्वरूप की जानकारी द्वारा प्रतिस्थापित करना'' है, ''ऐसा प्रयास व्यवस्था को सही अर्थों में जानना चाहता'' है। व्यापक रूप में राजनीति दर्शन इसके आरंभ से ही, लगभग बिना किसी विवेचना के हाल ही में उस समय तक परिष्कृत होता रहा है जब व्यवहारवादियों ने इसकी विषय वस्तु, तरीकों और कार्यों पर विवाद उठाना आरंभ किया तथा इसकी तथाकथित संभावनाओं को चुनौती दी।

2.5 एक समग्र अभिगम

यदि राजनीति विज्ञान का विज्ञानवाद अथवा नैतिकवाद में गुम हो जाना अनुमत नहीं किया जाना महत्त्वपूर्ण है तो यह भी महत्वपूर्ण हैं कि राजनीतिक सिद्धांत के वैज्ञानिक और दार्शनिक पहलूओं को समझने का प्रयास करें, पर इससे पहले कि हम राजनीतिक सिद्धांत के वैज्ञानिक पहलू को समझे, हमें यह समझना चाहिए कि विज्ञान क्या है, ठीक उसी प्रकार जैसे हमें राजनीतिक सिद्धांत के दार्शनिकीय पहलू को समझने का प्रयास करने से पहले, यह समझना चाहिए कि दर्शन क्या है।

विज्ञान का विभिन्न प्रकार से वर्णन किया जाता है जैसे ''उस ज्ञान अथवा अध्ययन की शाखा जो क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित तथ्यों और सत्यों के निकाय से जुड़ी है तथा सामान्य नियमों के प्रचलन को दर्शाती है'', योजनाबद्ध अध्ययन द्वारा अर्जित सिद्धांतों के तथ्यों की जानकारी'', ''संगठित ज्ञान के स्कंध अथवा निकाय'' के रूप में। इस प्रकार समस्या के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक अभिगम में दो बातें अन्तर्ग्रस्त होती हैं : (क) पद्धतियों पर सामंजस्य, तथा (ख) वैज्ञानिक कार्य में मानव का प्रशिक्षण। इन दो पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, फ्रीडरिच विज्ञान को ''क्रमबद्ध ज्ञान के निकाय जो उन पद्धतियों के प्रयोग के माध्यम से जानकारी के उस क्षेत्र में विशेषज्ञों को ज्ञात हो और प्रकार की जानकारी को प्राप्त करने के लिए संभाव्य तरीकों के रूप में स्वीकार करते हैं'' के रूप में परिभाषित करेंगे। इस प्रकार विज्ञान ''संगठित' ज्ञान है और चूँकि विभिन्न विद्धवानों द्वारा उस विज्ञान की विशेष जानकारी को एकत्रित करने में नियोजित पद्धतियों में समानता है, जो इसे तार्किक संसक्तता प्रदान करता है, वैज्ञानिक विवरणियाँ अन्य विद्धवानों द्वारा वैधीकरण के लिए सक्षम होती हैं। विज्ञान की यह परिभाषा जिसे चुनौती देना शायद ही संभव होगा, यह नहीं कहती है कि सभी प्रकार के विज्ञान के लिए एक ही प्रकार के तरीके प्रयोग किए जाएँ। वस्तुतः एक जगह प्रयुक्त तरीका दूसरी जगह लागू नहीं हो सकता है। समान्यीकरण के सरल उदाहरण को लेकर कोई भी दो विज्ञान सामान्यीकरण की अवस्था में सहमत नहीं होते जिससे उन्हें सही अर्थों में विज्ञान बनाया जा सके। जो तरीके भौतिकी और रसायन के अध्ययन में अत्यधिक सफल हैं, समान रूप से खगोल विज्ञान को लागू नहीं होंगे अपितु ऐसा अध्ययन खगोल विज्ञान की ''वैज्ञानिकता'' से अलग नहीं होता। यह तर्क दिया जा सकता है कि वे कम से कम इस अर्थ में समान हैं कि वे दोनों सुस्पष्ट प्रमात्रात्मक आँकड़े के साथ कार्य करते हैं। तथापि, विज्ञान मात्र शुद्धता की माँग नहीं करता, अपितु इसके लिए प्रासंगिक और परिणामों की पर्याप्तता अपेक्षित हैं। इतिहास विगत कुछ दशकों में अत्यधिक वैज्ञानिक बना दिया गया है। परन्तु इसके वैज्ञानिक स्वरूप के विकास का उसके प्रमात्रीकरण से कुछ लेना-देना नहीं है। यह साधनों के अधिक वैज्ञानिक अध्ययन तथा अन्य प्रकार के प्रमाण के अधिक समालोचनात्मक प्रयोग पर आधारित है, जिसके कारण इतिहास में वैज्ञानिक तरीके के प्रयोग में भारी प्रगति हुई है। फ्रीडरिच इसे और अधिक स्पष्ट करता है कि ''न तो सामान्यीकरण की अवस्था और न ही प्रमात्रीकरण की अवस्था स्वयमेव विज्ञान की प्रगति का ''निरपेक्ष'' मानदण्ड हैं, अपितु इसका हस्तगत सामग्री के संबंध में मूल्यांकन किया जाना चाहिए और तदनुसार निर्धारण भी''। वह इस अनुमोदन के साथ अरस्तू का उदाहरण देते हैं जब वह इसका ''प्रशिक्षित आदमी की पहचान'' के रूप में वर्णन करते हैं जिससे ''प्रत्येक वस्तु वर्ग में परिशुद्धता की तलाश की जा सके जहाँ तक इसे प्रजा की प्रकृति स्वीकार करे''।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति के अध्ययन के लिए दार्शनिकीय तथा समग्र अभिगमों के बीच अन्तर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 राजनीतिक शास्त्र का स्वायत्त स्वरूप

नॉरमन जैकबसन के मतानुसार, विज्ञान अथवा दर्शन के साथ राजनीति विज्ञान की सूक्ष्म पहचान से एक अन्य प्रकार का ख़तरा प्रकट होता है, राजनीतिक सिद्धांत का जो किसी प्रकार के 'विज्ञानवाद' अथवा 'नैतिकवाद' में सिमट कर रह जाएगा। जैकबसन ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि राजनीति विज्ञान न तो विज्ञानवाद है और न ही नैतिकवाद. न पूरी तरह विज्ञान से इसकी पहचान है न ही नैतिकता से. अपितु यह उन दोनों से अलग है और अपनी निजी पहचान बनाए हुए है। वे जो राजनीति विज्ञान को विज्ञान का पूर्ण स्वरूप देना चाहते हैं तथा इस पर विज्ञान की पद्धतियों और क्रियाविधियों को लागू करने का प्रयास करते हैं, हमेशा नहीं समझ पाते हैं कि विज्ञान का क्या अर्थ है। एक क्षेत्र की जानकारी का प्रयोग करके दूसरे क्षेत्र की बेहतर जानकारी के लिए लाभ उठाने से कोई इंकार नहीं कर सकता, परन्तु इन क्षेत्रों के बीच अन्तर को समझना पड़ेगा। जैकबसन का मत है कि समसामयिक राजनीति वेत्ता राजनीति विज्ञान को राजनीति विज्ञान से इतर राजनीति विज्ञान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। वह लिखते हैं कि ''ऐसा प्रतीत होता है कि राजनीति मनोविज्ञान है, अथवा यह समाजशास्त्र है अथवा यह नैतिक दर्शन अथवा धर्मशास्त्र है''. यह कि ''यह राजनीति से अन्यथा लगभग कुछ भी है''। अन्य विधाओं में जाँच के जिन क्षेत्रों को प्रस्तुत करना है की ओर सर्वाधिक ध्यान आकर्षित करके इस पर और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ने में कोई नुकसान नहीं है, परन्तु ऐसा मात्र उसी समय तक किया जा सकता है जब तक इससे राजनीति को बेहतर तौर पर अध्ययन में मदद मिले। यदि 'विज्ञान' को राजनीतिक सिद्धांत से अलग कर दिया जाए, तब यह मात्र एक व्यर्थ ''नीतिगत'' अवशिष्ट हो जाएगा; यदि दर्शन को इससे अलग कर दिया जाए, तब यह घटकर मात्र एक पद्धतिवत हो जाएगा। वे जो राजनीति विज्ञान के वैज्ञानिक अथवा दार्शनिकीय स्वरूप पर उस सीमा तक बल देते हैं, जहाँ तक एक अथवा अन्य के साथ राजनीति विज्ञान की पहचान की जा सके, ''विज्ञानवाद' अथवा ''नैतिकवाद'' की अच्छी वकालत कर सकते हैं परन्तु के निश्चित रूप से स्वयमेव राजनीतिविज्ञान के प्रति वचनबद्धता के अर्थ में अभावग्रस्त हैं।

2.7 अनुभवजन्य बनाम नियामक सिद्धांत

जहाँ समय-समय पर राजनीति विज्ञान के विभिन्न अभिगमों की वकालत होती रही है, और उनमें से कई प्रायः साथ-साथ सह-अस्तित्व में रहे हैं, उन्हें व्यापक तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है - एक तरफ अनुभवजन्य-विश्लेषणात्मक अथवा वैज्ञानिक-व्यवहारात्मक अभिगम दूसरी तरफ तथा विधिक ऐतिहासिक अथवा नियामक दार्शनिकीय अभिगम तथा इनमें से प्रत्येक अभिगम की दूसरे के साथ इस प्रबलन (Demarcation) के साथ हदबंदी (Emphasis) है कि जो मूल्यों के साथ तथ्यों अथवा तथ्यों के प्रति मूल्यों पर आरोपित है। इस सम्बन्ध में दो विरोधी स्थितियाँ उनके द्वारा उठाई गई हैं जिनका रॉबर्ट डाल द्वारा अनुभवजन्य सिद्धांतवादियों और परा-अनुभवजन्य-सिद्धांतवादियों के रूप में वर्णन किया गया है। अनुभवजन्य सिद्धांतवादी मानते हैं कि तथ्यों पर आधारित मात्र अनुभवजन्य राजनीति विज्ञान ही संभव हैं, जबकि दूसरे, परा-अनुभवजन्य सिद्धांतवादियों का मत है कि राजनीति का अध्ययन यथार्थतः वैज्ञानिक न तो हो सकता है और न ही होना चाहिए। यह विरोधाभास मुख्यतः दो प्रमुख मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमता है :

i) क्या राजनीतिक विश्लेषण तटस्थ हो सकता है?

ii) क्या राजनीतिक विश्लेषण तटस्थ होना चाहिए?

प्रथम स्थिति में अनुभवजन्य सिद्धांतवादियों का निश्चित मत है कि क्या अनुभवजन्य प्रस्थापनाएँ सत्य हैं अथवा गलत; इस मूल्य-आधारित प्रश्न पर विचार करने की आवश्यकताओं के बिना राजनीति के बारे में हमारे विश्वासों को पृथक् करना अथवा उनका परीक्षण करना संभव है। अनुभवजन्य तौर पर क्या सच है, इस बात 'सही' पर निर्णय, क्या होना चाहिए सही निर्णय से भिन्न होगा। क्या मूल्य ईश्वरेच्छा से व्युत्पन्न होते हैं अथवा प्राकृतिक नियमों से अथवा पूर्णतः प्रकृति के अधीन है, जैसा कि यथार्थवादी मानते हैं। तथ्य हम सभी के विचारार्थ हैं और अनुभवजन्य परीक्षणों के अधीन हो सकते हैं, जबकि मूल्यों का इस तरीके से परीक्षण नहीं किया जा सकता। क्या सामान्यतः अथवा किसी विशेष देश में लोकप्रिय सरकारों की स्थिरता किसी भी प्रकार से साक्षरता, बहुदलीय प्रथाओं, सानुपातिक प्रतिनिधित्व, द्वि-दलीयतंत्र पर निर्भर है, क्या यह एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों के तहत श्रेष्ठतम कार्य पर सकती है, ऐसे प्रश्न हैं जिसका इस तथ्य की ओर ध्यान दिए बिना परीक्षण किया जा सकता है कि क्या वे सही अथवा गलत राजनीतिक तंत्रों से जुड़े हुए हैं। दूसरी तरफ परा-अनुभवजन्यवादी मानते हैं कि प्राकृतिक विज्ञान में कैसी भी स्थिति हो, तथ्य और मूल्य एक-दूसरे के साथ इतनी निकटता से अन्तर्ग्रथित हैं कि राजनीति के अध्ययन में कोई भी व्यापक सिद्धांत उनके अनुसार निरपवाद रूप से मात्र इस सिद्धांत में तथ्यगत विवरणियों की अनुभवजन्य वैधता के मूल्यांकनों पर आधारित नहीं होगा, अपितु उसमें उस सिद्धांत में वर्णित राजनीतिक घटनाओं, प्रक्रियाओं अथवा पृथाओं की नैतिक गुणवत्ता भी होगी। अतः परा-अनुभवजन्यवादियों के अनुसार यह विचार करना एक भ्रम है कि राजनीति का पूर्णरूपेण उद्देश्यपरक सिद्धांत हो सकता है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति विज्ञान के स्वायत्त स्वरूप पर टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) नियामक और अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत के बीच अन्तर बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 उत्कृष्ट कार्यों (Classics) की समसामयिक प्रासंगिक

जहाँ ''व्यवहारवाद'' के प्रभावशाली वैज्ञानिक आवरण के अधीन अनुभवजन्य सिद्धांतवादी पचास में और साठवें दशकों के दौरान राजनीति विज्ञान की विधा पर नियंत्रण रखते हुए प्रतीत हुए, वहीं प्रतिष्ठित राजनीतिक दर्शन के 'प्रयोग' और 'प्रासंगिक' व्यापक रूप से पुनर्गठित होती रही और बड़ी संख्या में प्रभावशाली राजनीतिक विचारवेत्ता परम्परागत-प्रतिष्ठित राजनीतिक सिद्धांत की रक्षा और समर्थन करते रहे तथा अनुभवजन्य-विश्लेषणात्मक अभिगमों की कटुता से आलोचना करते रहे। उनकी संख्या संभव है, अधिक न हो, परन्तु वे विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखते हैं और बड़ी संख्या में अपने विद्यार्थियों और प्रशंसकों पर अपना भारी प्रभाव रखते हैं। इस संबंध में तत्काल दिमाग को स्पर्श करने वाले नामों में माइकल ओकशॉट, हान्ना आरेण्ड, बट्रैण्ड जुनेल, लियो स्ट्रॉस, क्रिस्टियन बे और एरिक वोगेलिन के नाम आते हैं।

एक उत्कृष्ट कार्य को स्वयमेव किसी 'वर्ग' में कार्य, ''प्रथम श्रेणी के और अभिस्वीकृत बुद्धिमत्ता'' के कार्य के रूप में परिभाषित किया गया है। प्लैटो की *रिपब्लिक एंड लॉज*, अरस्तू की *एथिक्स एंड पॉलिटिक्स*, अगस्टाइन की *सिटी ऑफ गौड*, एक्विनास की *सुम्ना थियोलोजिका* में *ट्रीटाइज ऑन लॉ*, मैकियावैली की *प्रिंस एंडेडिसकोर्सेज*, हॉब्बस की *लेवियाथन*, लॉक की *सेकिण्ड ट्रीटाइज़* रूसो की *सोशल कॉण्ट्रेक्ट*, हेगेल की *फिलॉसाफी ऑफ राइट* तथा मार्क्स की *फिलॉसाफीक एंड इकॉनॉमिक मैनुस्क्रिप्टस ऑफ 1844* तथा *जरमन ऑडियोलॉजी* जैसी पुस्तकें 'उत्कृष्ट कार्य' की श्रेणी में आते हैं। बहुवचन के रूप में इस शब्द के यथार्थ प्रयोग में 'कई स्वरों के वार्तालाप', विभिन्न परिप्रेक्ष्यों के बीच उपकथन तथा कुल मिलाकर वास्तविकता का विवेचन शामिल है। जैसा कि डैंटो जर्मिनो ने इंगित किया है कि 'वार्तालाप' ''कई स्वरों का संघर्ष नहीं है, अपितु कतिपय तर्क की आधिकारिक स्थिति की प्रतिक्रिया है जिसकी केवल उन्हीं के द्वारा पहचान की जा सकती है जो उसे ध्यान से सुनते हैं।'' यह ''मानसिकता का वार्तालाप'', है जो आधुनिक समय से परे मध्ययुगीन और प्राचीन काल तक व्याप्त है तथा जिसकी गुणवत्ता उस समय अथवा स्थान से प्रभावित नहीं होती जिसमें एक विशेष राजनीतिक दार्शनिक अवस्थित था। वह सब जो आवश्यक था, यह था कि ''मानवता के इस वार्तालाप में भाग लेने वाला उस दिन के मुद्दों में प्रत्यक्ष तौर पर अन्तर्ग्रस्त था जो चाहे राजनीति में हो अथवा दर्शन में, सभी कालों के मुद्दे हैं, और इन मुद्दों पर गहन विचार अथवा चिन्तन के लिए सक्षम था तथा उस भाषा में स्वयं को अभिव्यक्त कर सकता था, सभी युगों के मानवों को अपील करे।

2.9 परम्परागत राजनीतिक चिंतन की निरन्तरता

माइकल ऑकशॉट जिन्होंने 1951 में हैराल्ड लास्की से लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स एंड पोलिटीकल साइंस में राजनीति विज्ञान का प्रमुख पद सँभाला था, की इंग्लैंड में रूढ़िवादी सोच के पुनरुत्थान के साथ पहचान की जाती है। परन्तु ऑकशॉट को मात्र रूढ़िवादी मानना गलत होगा, यद्यपि वह उस अवधि के प्रत्येक अर्थ में रूढ़िवादी थे। उनका प्रमुख योगदान पूछताछ की परम्परा के रूप में राजनीतिक सिद्धांत को बहाली तथा राजनीति विज्ञान के लिए समालोचनात्मक, सैद्धांतिक विश्लेषण की संभावना को पुनः कायम करना था। व्यवहारवादियों से भिन्न जो उस समय संयुक्त राज्य अमेरिकी में एक पहचान बनने की शुरुआत कर रहे थे जब वह लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में अपने छात्रों को अपने संभाषणों और सेमीनारों में तथा अपने प्रकाशनों के माध्यम से एक भिन्न प्रकार के सिद्धांत का विवेचन कर रहे थे। ऑकशॉट का अपना दार्शनिकीय विश्लेषण अनुभव पर आधारित था जो उस विविध-आयामन, के पुनरोद्घाटन की माँग करता है जिसे सिद्धांतवादी और

प्रत्यक्षवादी लेखकों द्वारा किए गए अनुभव के प्रति नकार दिया गया था। ऑकशॉट दर्शन और विज्ञान को मौलिक रूप से दो भिन्न प्रकार के क्रिया कलापों के रूप में मानते हैं और उनका विश्वास है कि एक के तरीकों और चिन्तकों को दूसरे को अन्तरित करने का प्रयास गलत होगा। वह लिखते हैं कि ''यह धारणा कि दर्शन को वैज्ञानिक चिंतन के तरीकों से कुछ सीखना है, पूर्णरूपेण गलत है।'' उनके अनुसार, ''दर्शन को अपना निजी हितार्थ जारी रखना चाहिए और इसे सभी असम्बद्ध हितों और विशेष रूप से व्यावहारिक हित से इसकी स्वतंत्रता को बनाए रखना चाहिए।''

ऑकशॉट मानते हैं कि राजनीति दर्शन अथवा जैसा वह कहना पसन्द करेंगे– राजनीति के बारे में दर्शनीकरण - दर्शनीकरण के विशाल अभिनय के संदर्भ में एक सीमित क्रियाकलाप है - ''अनुभव की पूर्णता की दृष्टि से अनुभव-व्यावहारिक अनुभव की किसी विशेष अवस्था को देखने'' का प्रयास। हॉब्बस लेवियाथन की अपनी भूमिका में जैसी कि वह चर्चा करते हैं, राजनीतिक जीवन के बारे में प्रतिक्रिया कई प्रकार के स्तरों पर हो सकती है और वह एक स्तर के दूसरे तक प्रवाह के लिए पर्याप्त थी, परन्तु राजनीतिक दर्शन में हमारे दिमाग में राजनीतिक क्रियाकलापों का एक विश्व तथा एक ''अन्य विश्व'' भी होता है और हमारा प्रयास ''दोनों विश्वों की संसक्तता को एक साथ'' तलाश करना है। उनके लिए ''राजनीतिक दर्शन राजनीति और अनंतता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन'' है। ''राजनीति एक लक्ष्य को पूरा करने में सहायक है जिसे यह स्वयमेव प्राप्त नहीं कर सकती''। ऑकशॉट के लिए राजनीति दर्शन ऐसा नहीं है जो व्यवहारवादियों के लिए है, ऐसा ''प्रगतिशील'' विज्ञान है जो ठोस परिणामों का संचयन करता है और उन नतीजों पर पहुँचता है जिन पर आगे का अनुसंधान आधारित होता है। दूसरी तरफ यह निकटता से इतिहास से जुड़ा हुआ है– ''वस्तुतः एक अर्थ में यह कुछ नहीं है अपितु इतिहास है, यह उन समस्याओं का इतिहास है जिन्हें दार्शनिकों ने खोज निकाला है तथा समाधान के उस तरीके का इतिहास है जो उन्होंने प्रतिपादित किया है बजाए इसके कि यह सिद्धांतों का इतिहास है.....।''

हन्नाह अरैण्ड कहीं अधिक फलदायी लेखक हैं। अत्यधिक पांडित्य के व्यक्तित्व के साथ उन्होंने राजनीतिक सिद्धांत की प्रमुख समस्याओं पर अधिकाधिक प्रकाशित किया है और एक अपवादात्मक मौलिकता वाले विचारवेत्ता के रूप में अपनी प्रतिष्ठा कायम की है। अलग-अलग मानवीय व्यक्तित्व के अनोखेपन और उत्तरदायित्व में विश्वास रखते हुए उसने सभी प्रकार के सर्वाधिकारवाद का मात्र विरोध ही नहीं किया है अपितु सामाजिक विज्ञान में व्यवहारवादी अभिगम का भी विरोध किया है, जिससे उनके अनुसार सर्वाधिकारवाद का आधार तैयार होता है। मानवीय व्यवहार में एकरूपता की अपनी तलाश में वह चेतावनी देती हैं कि यह स्वयमेव एक समान रूढ़िवादी ''मानव'' का सहयोग करेगा।

हन्नाह अरैण्ड के नाम के साथ बट्रैण्ड द जुबैनेल के नाम की शायद चर्चा की जा सकती है। दोनों मानते हैं कि राजनीति में रचनात्मक क्रियाकलाप की क्षमता है और उसे प्रशासन मृतप्राय एकरूपता में रूपांतरित नहीं किया जाना चाहिए। दोनों सर्वाधिकारवाद के प्रतिकूल हैं, जो बीसवीं शताब्दी की प्रबल घटना के रूप में आने के लिए आशंकित है और उन्होंने इसकी बौद्धिक और नैतिक मूल की जाँच करने का प्रयास किया है।

शिकागो विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर लियो स्ट्रॉस जिनकी अक्टूबर 1973 में मृत्यु हुई राजनीति दर्शन की महान् हानि थी। समसामयिक सिद्धांतवादियों में सर्वाधिक असाधारण व्यक्तित्व में से एक हैं और व्यवहारवादी अभिगम के कटु समालोचक हैं। अमेरिकी दर्शन और राजनीति पर उनका प्रभाव अति महान रहा है। शिकागो में, एक बड़ी संख्या में राजनीति के वैज्ञानिक हैं जो स्वयं को उनका शिष्य मानने में अपना विशेषाधिकार मानते हैं।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति के उत्कृष्ट कार्यों की प्रासंगिक पर टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) माइकल ऑकेशॉट अथवा हन्नाह अरेण्ड के विचारों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.10 राजनीति का नया विज्ञान

2.10.1 ऐरिक वोगलिन के विचार

आधुनिक राजनीतिक विचारकों में जिन्होंने राजनीतिक दर्शनीकरण की ऊँचाइयों में उड़ान भरी है, एरिक वोगलिन का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। वह एक फलदायी लेखक हैं, यद्यपि उनकी शैली कुछ जटिल है तथा हमेशा उनका अनुसरण करना आसान नहीं है। वह राजनीतिक सिद्धांत और राजनीति विज्ञान के बीच अंतर नहीं करते– उनके अनुसार राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ है राजनीति पर एक समालोचनात्मक प्रतिक्रिया, जिसके बिना कोई राजनीति विज्ञान नहीं हो सकता। वोगेलिन का प्रबल मत है कि हमारे पास कभी भी सैद्धांतिक विश्लेषण में पूरी तरह आगे बढ़ने के लिए सामग्री की उपलब्धता तथा बौद्धिक वातावरण की उपयुक्तता नहीं थी, जैसा कि आजकल है। वोगेलिन आधुनिक दर्शन में तंत्र निर्माण के विरुद्ध हैं और मानते हैं कि तंत्र निर्माता अस्तित्व के मौलिक अनुभव से अनजान हैं।

वोगेलिन के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांतवादी का कर्तव्य है इतिहास के माध्यम से मनुष्य के अनुभवों की जाँच करना और उनका समालोचनात्मक मूल्यांकन करना, जिससे उस प्रकाश की तलाश की जा सके जिसे वे मानव समाज में व्यवस्था के लिए सत्य की अपनी खोज में प्रयोग कर सकें. ऐसा कार्य जिसे ग्रीक दार्शनिकों और ईसाई धर्म मीमांसकों द्वारा श्रेष्ठता से पूरा किया गया था। वोगेलिन उन आधुनिक राजनीतिक सिद्धांतवादियों से

तीव्रता से असहमत हैं जो राजनीतिक सिद्धांत को आवश्यक रूप से प्रणाली विज्ञान के रूप में तथा उसके कार्य को मात्र ''घटनात्मक स्तर पर हस्त-अप्रयुक्त अनुसंधान को व्यवहारात्मक अनियमितताओं के रूप में ''कारक के रूप में मानेंगे''। अपितु वह राजनीति विज्ञान को ''विद्यमान मानवीय व्यक्तित्व के सकल अनुभव पर आधारित सही क्रम वाली परीक्षणात्मक विज्ञान के रूप में मानेंगे''। वोगेलिन के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत का कार्य ''अनुभवजन्य और समालोचना के तौर पर व्यवस्था की उन समस्याओं को परिष्कृत करना है जो दार्शिनिकीय मानव विज्ञान से सत्ता मीमांसा के एक अंग के रूप में व्युत्पन्न होती है''।

2.10.2 क्रिश्चियन बे के विचार

ऐसे समय पर जब व्यवहारवादी लोकतंत्र की विशिष्टतम धारणा को अपने ''अनुप्रयुक्त'' अध्ययनों और सांख्यिकीय आँकड़ों के संग्रहण के माध्यम से युक्तियुक्त और न्यायनिर्णीत करने की कोशिश कर रहे थे, उसी समय क्रिस्टियन बे, उत्कृष्ट राजनीतिक दार्शनिकों की सर्वोत्कृष्ट परम्परा के अनुरूप, उनकी ''बुद्धिमत्ता'' पर प्रश्नचिह्न लगा रहे थे और पूछताछ की उन समस्याओं और परिप्रेक्ष्यों संबंधी कुछ मौलिक प्रश्न उठा रहे थे जो उनके द्वारा अनदेखे कर दी गई थीं। वह डेविड ईस्टन की राजनीति की परिभाषा ''वे प्रक्रियाएँ जिनके द्वारा सार्वजनिक मूल्य सत्ता और प्राधिकार के माध्यम से प्रोन्नत एवं वितरित किए जाते हैं से सहमत थे'', परन्तु इस परिभाषा में मानवीय आवश्यकताओं और समस्याओं की राजनीति में सम्बद्धता के किसी प्रसंग की वास्तविक अनुपस्थिति पर उन्हें आपत्ति थी। वह लिखते हैं कि आज राजनीति विज्ञान में व्यावहारिक अनुसंधान की मात्रा ''सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर मतदान तथा अभिमतों और दृष्टिकोणों पर ध्यान देती है। परन्तु हमें इस अनुसंधान में जिस राजनीतिक क्षितिज को हम समझ पाते हैं उसे ही राजनीतिक का पूरा दायरा नहीं समझ लेना चाहिए। ऐसा बहुत कुछ है जो उस समय ध्यान से चूक जाता है जब हम समाजशास्त्रीय तकनीकों – उदाहरण के लिए राजनीतिक वचनबद्धता के अलग-अलग अर्थों – के मानक प्रकारों द्वारा तत्काल मापन पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।'' वह लोकतंत्र के नियामक सिद्धांतों से व्यावहारिक आँकड़ों को अर्थपूर्ण ढंग से सम्बद्ध करने का प्रयास न करने के वर्तमान अनुसंधान में प्रचलित प्रवृत्ति के कटु आलोचक थे। इस संबंध में उन्होंने ''आश्चर्यजनक रूप से लोकतांत्रिक सिद्धांत के उपयुक्त अपने आँकड़ों को लाने के सतही प्रयास के साथ राजनीतिक व्यवहार के जोखिम भरे विश्लेषण'' का उद्धरण दिया जिसे बैरलसन, लाज़ार्सफेल्ड तथा मैकफी द्वारा उस समय किया गया था, जब उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि लोकतंत्र की अमेरिकी प्रणाली ''एक राजनीतिक संगठन को चलाने के लिए कतिपय अपेक्षाओं को पूरा नहीं करती है'' और यह कि ''यह प्रायः विशिष्टता के साथ कार्य करती है''। ''राजनीति की और अधिक पर्याप्त संकल्पना के साथ'' उन्होंने लिखा था, ''यह स्पष्ट हो आएगा, मेरा विश्वास है कि जो कुछ ये और राजनीतिक व्यवहार पर पुस्तकों के कई अन्य लेखक दृष्टिपात कर रहे हैं, आँकड़ों का मात्र एक सीमित दायरा है जिसे और अधिक वैज्ञानिक जिज्ञासा द्वारा तथा उस राजनीतिक सिद्धांत के अधिक व्यापक परीक्षण द्वारा भी बुरी तरह अनुपूरित किए जाने की आवश्यकता है जिसमें आवश्यकता, विकास तथा आम जनता की भलाइ जो नाममात्र की है, जैसी संकल्पनाओं के लिए स्थान शामिल है।'' बे को एस.एम. लिप्सेट जैसे ''परम आदरणीय लेखक'' के बारे में जानकर भारी धक्का लगा जिन्होंने बड़ी खुशी के साथ दावा किया कि लोकतंत्र ''स्वयमेव प्रचलन में एक अच्छा समाज है'', अथवा यह कि ''एक स्वतंत्र समाज के आंतरिक संघर्षों का लेन-देन'' श्रेष्ठतम था जिसकी मानव पृथ्वी पर रहते हुए आशा कर सकता था। कुछ और उदाहरणों की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा, ''समाजशास्त्रीय तकनीकों की उपलब्ध आयुधशाला का उपयोग करने के लिए संकल्पित इस अनुसंधान ने इस घटना को तनावयुक्त बना दिया है कि जिसकी राजनीति के और हटाने के लिए अपनी इच्छा में ये

अन्वेषक नियामक जिज्ञासा से उस कार्य को लोकतंत्र जो मानवीय इच्छाओं को स्वयमेव अंत अथवा समान अस्पष्ट धारणाओं के माध्यम के रूप में है, की अपरिपक्व धारणाओं और उसके बारे में कल्पनाओं से जोड़ते हैं''।

बोध प्रश्न 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिये इकाई का अंत देखें।

1) एरिक वोगलिन अथवा क्रिस्टियन बे के विचारों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.11 सारांश

राजनीति विज्ञान को उस सीमा तक अन्य सामाजिक विज्ञानों से विशिष्ट समझा गया था जहाँ तक यह समाज के भीतर सत्ता नियंत्रण की घटना से जुड़ा हुआ था। मैक्स वैबर ने एक संगठन अथवा परिसंघ को तभी राजनीतिक माना ''यदि और प्रशासनिक कर्मचारियों की तरफ से भौतिक बल के अनुप्रयोग और धमकी द्वारा एक प्रदत्त भू-भागीय क्षेत्र में उसकी व्यवस्था लगातार बनी रहती है''। तथापि, संस्थाओं को विश्लेषण की प्राथमिक इकाई के रूप में माना जाता रहा यद्यपि चिंतन का केन्द्र स्वयमेव संस्थाओं से हटकर सत्ता के संचयन और प्रयोग पर चला गया। रॉबसन लिखते हैं कि ''राजनीतिक वैज्ञानिक के 'चिन्तन का केन्द्र' स्पष्ट है और असंदिग्ध है, यह सत्ता को प्राप्त करने और कायम रखने के संघर्ष पर केन्द्रित है जिससे दूसरे के ऊपर सत्ता अथवा प्रभाव का प्रयोग किया जा सके अथवा उस प्रकार के प्रयोग का विरोध किया जा सके।'' और अधिक हाल ही के वर्षों में, चिन्तन का केन्द्र व्यष्टियों के बीच संबंधों तथा अन्तर्क्रियाओं के प्रतिमानों की ओर अति विशेष रूप से अंतरित हो गया है। चूँकि राजनीति अब ''एक पर्यावरण में मानवीय व्यवहार के पहलू'' के रूप में मानी जाती है। मूल्यों के आधिकारिक आबंटन के रूप में राजनीति की धारणा के व्यापक फ्रेमवर्क के भीतर इसका महत्त्व (1) विश्लेषण की इकाई के रूप में निर्णयन के साथ निर्णय करने और उसके निष्पादन से हटकर (2) नीति निर्माण जिसमें नीति घटक और राजनीतिक प्रक्रियाओं दोनों पर चर्चा होती है तथा अन्ततः (3) समाज के उद्देश्यों के निर्धारण और प्राप्ति की ओर चला गया है। द्वितीय और तृतीय पहलू के बीच प्रमुख अन्तर यह है कि द्वितीय पहलू प्रमुखतः उन राजनीतिक प्रक्रियाओं के सुस्पष्ट स्वरूप पर केन्द्रित है जो राज्य के भीतर संचालित हैं, अन्तिम पहलू उद्देश्यों और प्रयोजनवाद से सम्बद्धित है।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बैलानी आर., *थ्यौरीज़ एंड कॉन्सेप्ट ऑफ पॉलटिक्स : एन इंट्रोडक्शन,* मैनचैस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, मैनचैस्टर, 1993।

ब्लॉण्डेल, जे., *द डिसीपिल्न ऑफ पॉलिटिक्स*, बटर-पर्थ, लंदन, 1986।

लेफ्टविच, ए., (संस्करण), *ह्वाट इज़ पॉलिटिक्स?*, ब्लैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1984।

मूक, सी., *द रिटर्न ऑफ द पॉलिटीकल*, वैर्सो, लंदन, 1993।

प्लान, आर., *मॉडर्न पॉलिटीकल थॉट*, ब्लैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1991।

2.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 2.1

2) देखें भाग 2.2 और 2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 2.4 और 2.5

बोध प्रश्न 3

1) देखें भाग 2.6

2) देखें भाग 2.7

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 2.8

2) देखें भाग 2.9

बोध प्रश्न 5

1) देखें उप-भाग 2.10.1 और 2.10.2